गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/ICD/1252/2012-2014

golalariya_darshan@yahoo.in
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com

मासिक
गोलालारीय दर्शन

अपनों के साथ अपनी बातें

प्रतिभा विशेषांक

जो भरा नहीं हैं भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं। हृदय नहीं पत्थर हैं वो, जिसे समाज से प्यार नहीं।

वर्ष : 5 अंक : 2 पृष्ठ संख्या : 8 माह – 15 जुलाई 2013 सहयोग राशि : 100 रु

अतिथि संपादक की कलम से...

नैतिक संस्कार सफलता की पगडंडी

पढ़ाई–परीक्षा और परिणाम प्रतिवर्ष बच्चे प्ले ग्रुप से लेकर 25 वर्ष की उम्र तक इसी दौर से गुजरते है। आज कल पढ़ाई को हर माता पिता ने ''हऊआ'' बना रखा है जबकी शिक्षा प्रणाली पहले से बहुत सरल और लचीली हो गयी है। पढ़ाई का पहला अक्षर शुरु होता है माँ से और माँ ही हर बच्चे को अपने लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायता करती है। पर माँ आज कल पहले की तरह घर में रहने वाली नहीं है, कुछ माँए अपने काम की वजह से व्यस्त है तो कुछ माँए सोशल कार्य की वजह से। कहने का तात्पर्य यह है कि – माता पिता को अपने समय में से कम से कम एक–दो घंटे बच्चे के साथ बिताना ही चाहिए, ताकि वे उन्हें – उनका लक्ष्य और सही दिशा बता सके, उन्हें यहाँ वहां भटकने से रोक सके, उनमें आत्मविश्वास पैदा कर सके, जमाने के साथ चलना सीख सके। और सबसे खास बात उन्हें नैतिक शिक्षा, धार्मिक व सामान्य व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा एवं संस्कार दे सके, जिससे उनके मन में संतोष और शांति की अनुभूति महसूस हो । कुछ वर्ष पूर्व तक स्कूल में नैतिक शिक्षा के पाठ हुआ करते थे। एक छोटी सी घटना याद है एक कक्षा में अध्यापक किसी प्रसंग पर विद्यार्थियों को चाकलेट बांट रहे थे। इसी बीच प्रिंसिपल साहब ने उन्हें बुला लिया अध्यापक ने बच्चों से कहा कि मैं थोड़ी देर से आता हूँ चाकलेट का डिब्बा यहां रखा है, आप अपने हिस्से की चाकलेट ले लेवें। कुछ बच्चों ने आगे बढ़कर डिब्बे से अपने हिस्से की चाकलेट ले ली और कुछ अपने अध्यापक का इंतजार करने लगे। अध्यापक ने वापस आने के उपरांत बच्चों से कहा जिन्होने चाकलेट नहीं ली है वे आगे आकर चाकलेट ले लेवें। अध्यापक ने उन बच्चों के नाम अपने जेहन (याददाश्त) में रख लिये जिन बच्चों को उन्होंने अपने हाथ से चाकलेट दी थी, कालांतर पश्चात उन्होंने पाया कि वे बच्चों कक्षा के अन्य बच्चों से कही अधिक सफल रहे है। यहां यह बात आती है कि शिक्षा के साथ नैतिकता की शिक्षा भी बच्चों में प्रारंभिक अवस्था में ही देना चाहिए ताकि भविष्य में बच्चे किसी भी परिस्थिति में कभी कमजोर न हो। बच्चों के संपूर्ण विकास के लिए उन्हें पढ़ाई के साथ खेलकूद एवं अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों में संलग्नता के लिए एक निश्चित सीमा तक छूट प्रदान करना चाहिए ताकि उनका व्यक्तित्व निखर सके। उनमें वर्तमान परिवेश में हो रहे बदलाव को समझने और जूझने की क्षमता विकसित हो सके। तभी वे आशातीत सफलता अर्जित कर अपना व अपने परिवार तथा समाज का मान सम्मान बढ़ायेंगे।

– अंजू डॉ. राजेश जैन, भोपाल

नई ऊंचाईयों की ओर बढ़ते कदम...

मनुदेव पवन जैन, भोपाल ने भारतीय अभियांत्रिकी सेवा (IES) इलेक्ट्रानिक्स की परीक्षा में 8वीं रैंक प्राप्त की।

अनमोल अजय जैन, गंजबासौदा ने गेट 2013 की परीक्षा में 117 रैंक प्राप्त की।

रोहित राजेश जैन, टीकमगढ़ ने आईआईटी परीक्षा 2013 में 3692 रैंक प्राप्त की।

अवनी अनिलकुमार जैन मंडला ने आईआईटी परीक्षा 2013 में 8601 रैंक प्राप्त की।

एक नन्हा बालक अपने पैरों पर खड़ा होने का प्रयास कर रहा था किन्तु संतुलन न बन पाने के कारण बार बार गिर पड़ता। बार–बार वह इस क्रिया को दोहरा रहा था किंतु पूर्णत: सफल नहीं हो पा रहा था। उसकी माँ पास ही उत्साह से उसके प्रयत्न को देख रही थी। अबकी बार बालक ने फिर से अपने डगमगाते पैरो को सीधा करने की कोशिश की और क्षण भर के लिये स्थिर हुआ पर फिर गिर पड़ा। माँ ने इस छोटी सी सफलता पर तालियां बजायी और खुशी से उसका उत्साहवर्धन करते हुये कहा ''शाबाश, बेटा शाबाश''। एक बार और...माँ का प्रोत्साहन पा बालक इस बार दुगने जोश से प्रयास करने लगा और इस बार वह न केवल सीधा खड़ा हुआ वरन् पहले से कहीं अधिक देर तक खड़ा होने में सफल रहा।

घटना बहुत साधारण सी है परन्तु यह हमें किसी भी सफलता को प्राप्त करने के लिए अपनों के प्रोत्साहन का महत्व दर्शाती है। बालक को न केवल खड़ा होने या चलना सीखने वरन् जीवन की हर स्थिति में माता पिता का प्रोत्साहन और अपनत्व जरुरी होता है। कदम कदम पर उनका मार्गदर्शन पा वह सफलता के सोपानों को तय करता हुआ ऊंचाईयों को प्राप्त कर लेता है।

समय के साथ प्रोत्साहन का स्वरुप बदलता जाता है। एक उत्साह भरी शाबाशी के साथ छोटे छोटे उपहार जहां बच्चों में जोश भर देते है वहीं बढ़ती उम्र के साथ उपहारों का रुप भी बदल जाता है। इसी तरह समय के साथ मिलती उत्तरोत्तर सफलता से माता पिता की प्रसन्नता गर्व में बदल जाती है और बच्चों की आकांक्षायें महत्वकांक्षाओं में तब्दील हो जाती है। इसके साथ ही प्रोत्साहन और पुरस्कारों का दायरा भी बढ़ता हुआ परिवार, समाज और अनेक सामाजिक संगठनों तक पहुंच जाता है।

प्रसन्नता का विषय है कि वर्तमान समय में समाज ने शिक्षा के क्षेत्र में उभरती प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करने के लिये सम्मान और पुरस्कारों की पहल की है। इससे एक ओर प्रतिभाशाली, सफल छात्र छात्राओं का उत्साहवर्धन हुआ है वहीं उनके माता पिता को समाज के समक्ष मस्तक ऊंचा करने का अवसर भी मिला है। सभी छोटे बड़े शहरों और गांवों में इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया जाना चाहिये। परन्तु क्या इतना प्रयास काफी है? कदाचित नहीं। केवल मंच पर प्रतिभाओं के सम्मान और पुरस्कार मात्र से हमारा उद्देश्य पूर्ण हुआ नहीं समझना चाहिये। हमें एक कदम और आगे बढ़कर उन साधनविहीन प्रतिभाओं की खोज भी करना चाहिये जो वर्ष भर आवश्यक संसाधनों को जुटाने में ही अपना समय और ऊर्जा खर्च कर देते है तथा अपने यथेष्ट लक्ष्य से वंचित रह जाते है। कितने ही परिवार अर्थाभाव के कारण अपने सुयोग्य पुत्र या पुत्री को उच्च शिक्षा नहीं दिला पाते या अमूल्य अवसरों को खो देते है। इस संदर्भ में गोलालारीय समाज न्यास, इन्दौर की पहल सराहनीय है। लगभग 18 वर्ष से भी अधिक समय से यहाँ प्रतिवर्ष प्रतिभाओं का सम्मान और प्रोत्साहन किया जा रहा है। इसके साथ ही एक 'शिक्षाकोष' भी स्थापित किया गया जो प्रतिवर्ष जरुरतमंद परिवारों की उनके आवेदन पर पूर्णत: गोपनीय ढंग से यथोचित आर्थिक सहायता करता है ताकि लाभान्वित परिवार के आत्म सम्मान को ठेस न पहुँचे। संक्षेप में यह कि हम अपने सेवा कार्यो को आत्मसंतुष्टि के लिये करें न कि दुनिया की नज़र में दानवीर कहलाने के लोभ में।

समाज द्वारा सफलता के शिखर को चूमने वाले विजेताओं का अभिनंदन करना सराहनीय है किन्तु यदि हम शिखर तक पहुँचने वाले मार्ग को भी निष्कंटक करने में उनकी सहायता करते है तो हम अपने विजेताओं की संख्या में बढ़ोतरी कर सकते है। इसके लिये अल्प आय वाले परिवारों की सूची बनाकर उनकी यथोचित सहायता की जाये। शिक्षा सहायता कोष बनाकर शिक्षा हेतु कर्ज या छात्रवृत्ति प्रदाने करने का प्रावधान किया जाना चाहिये। समाज के आर्थिक रुप से सक्षम और समर्थ महानुभावों को इस ओर सार्थक पहल करनी चाहिये। हर छोटे बड़े शहरों में यदि पूर्ण निस्वार्थ भाव से ऐसे प्रयास किये जाये तो निश्चित ही परिणाम सुफलदायी होंगे अन्यथा प्रतिभा सम्मान समारोह केवल समारोह बनकर रह जायेगा। तो आइये हमारे शत् प्रतिशत साक्षर समाज को उच्च शिक्षित और प्रगतिशील बनाने की ओर एक कदम और बढ़ाये और अपने समाज के नौनिहालों के सुनहरे भविष्य की नींव में एक ईंट हम भी रखें।

इसी के साथ ही माता पिता की भूमिका भी उल्लेखनीय है। बहुधा माता पिता अपने बच्चों की प्रतिभाओं को कुछ कमतर आंकते है अथवा उसकी उपेक्षा करते है। उसे यथोचित प्रोत्साहन नहीं देते या फिर समाज के समक्ष रखने में हिचकिचाते है। कुछ स्वाभीमानी माता पिता अपने अर्थाभाव को सबके समक्ष लाने में भी हिचकते है। इन सभी का दुष्परिणाम अंतत: प्रतिभावान विद्यार्थियों को ही उठाना पड़ता है जिसे कदापि उचित नहीं कहा जा सकता। अत: ऐसे सभी अभिभावकों से हमारा निवेदन है कि वे अपनी झिझक या शर्म को परे रख अपने बालक के भविष्य को प्राथमिकता दे और उसे आगे बढ़ाने में सहयोग करें।

– अनुपमा–रजनीश जैन, सहसंपादिका

गोलालारीय दर्शन समाज के 4500 परिवारों तक नियमित भेजा जा रहा है। संभव है डाक व्यवस्था या आपका पता सही न होने के कारण पत्रिका आपको व आपके रिश्तेदारों तक पत्रिका नहीं पहुंचती है तो उनका नाम व पता पोस्टकार्ड पर लिखकर पत्रिका कार्यालय पर भेज देवें या 9424013136 पर दोप. 4 से रात्रि 10 तक संपर्क कर सकते है या अपने पता का एसएमएस कर सकते है।